Urdu University Bill, 220 1995—Contd.

The House reassembled after Lunch at twelve minutes past two of the Clock —The Vice Chairman (Miss Saroj Khaparde) in the Chair.

THE MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY BILL, 1995— CONTD.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): We take up further consideration of the Maulana Azad National Urdu University Bill, 1995. Dr. Jagannath Mishra—not present; Shri Saifulla—not present; Shri Mohd. Azam Khan—not present; Shri Suresh A. Keswani—not present. Shri Mohd. Masud Khan.

श्री मोहम्मद मसद खान (उत्तर प्रदेश): मैडम, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू युनिवर्सिटी बिल जो आया है, उसकी मैं भरपूर ताईद करता हूं और इसकी भी ताईद करता हूं कि इसकी स्थापना हैदराबाद में हो रही है। हैदराबाद में बहत पहले उस्पानिया यनिवर्सिटी ने इस सिलसिले में काफी काम किया था। ज्ञायद अब उसका रूप बदल गया है। लेकिन जो पिछली इन्फोमेंशन मेरी उसके एतबार से बहुत ज्यादा काम हुआ था और उस काम को आगे बढाने में इससे बड़ी मदद मिलेगी। मैडम, सबसे कठिन काम इसमें जो है, वह कोर्स को तैयार करना और टेक्रीकल बातों को लेना है इसमें कोई शुक्छा नहीं है कि उर्दू जुबान जो है वह मुख्तलिफ ज़नानों की टेक्रीकल बातों को उसी अंदाज में ले लेती है। मगर इसमें एक चीज मैं बताना चाहता हं कि अगर इसमें वाकई इल्मी काबिलियत के लोग आप नहीं रखेंगे तो यह काम नहीं हो सकेगा। मैं और ईश दत्त यादव एक मर्तबा कलकता गए। हम बाजार में घुम रहे थे। दुकानदारों ने समझ लिया कि हम लोग जंगला नहीं जानते। उनमें एक ने बडे अच्छे अंदाज में कहा कि ''चाहे टेक चाहे न टेक जरा सी तो सही''। कहीं इस किस्म का कोर्स वहां के लिए न बन जाए। कोर्स की तैयारी के वास्ते जब तक अच्छे, तालीमयाफता और आला काबिलियत के लोग नहीं रखे जायेंगे तो कोर्स को तैयार करना बड़ा मुक्तिल हो जाएगा, टेक्रीकल लफ्जों को लेना बहुत मुश्किल हो जाएगा। इसमें कोई शुबहा नहीं कि यह युनिवर्सिटी कामयान उसी वनत हो सकती है जब कि उर्द की तालीम शुरू से हो। कोई दर्जा पांच में जाकर वहां दाखिल तो करेगा नहीं और अगर करेगा तो कितने लोग दाखिला करवायेंगे? तो जब तक इफितदाई दरजात से उर्दू की तरको नहीं होगी तब तक यह युनिवर्सिटी कामयाय नहीं हो सकती। इफ़तदाई दरज़ात की पोज़ीशन यह है कि हम लोगों के ज़िले में एक उर्द मीडियम स्कूल है लेकिन मुश्किल से वहां कोई टीचर उर्दू जानने वाला है। लेकिन नाम है उसका उर्दू मीडियम स्कूल। अब की दफा तो एक अजीब लतीफा हुआ। मैं अपने गांव में गया। एक रिटायर्ड टीचर मुझे मिले। मुझ से पूछने लगे कि बाबू क्या यह गुजराल साहब वही हैं जो एक कमेटी बनी थी जिसके वह हैड थे। हमने कहा हां, वही हैं। तो कहने लगे कि अब तो गजराल कमेटी **भर अमल दरामद होगा क्योंकि अब तो वह मिनिस्टर हो** गये हैं। हमने कहा कि बड़ी अच्छी बात है। लेकिन फिर वह टीक्स कहने लगे कि 20-25 साल प्रतले की कप्रेजी निकलेगी तो कहीं सरकार यह न कहे कि फिर से एक कमेटी बैठाई आए। 10 साल उसमें चलें और फिर नये सिरे से कमेटी की रिपोर्ट आवे। तो इस तरह से अगर युनीवर्सिटी को घुमाना है तो इससे तो सह-लिसानी फार्मुला बड़ा अच्छा था। उस फार्मूले पर अगर वाकई अमल हो तो शुरू से ले कर हमको लडके मिलेंगे पढ़ने के वास्ते उस यनिवर्सिटी में । मेरी आपके माध्यम से मंत्री जी से यह गुज़ारिश है कि इस बात का भी ख्याल रखा जाए कि वाकई वह जिस दर्जे से युनीवर्सिटी को चलाने वाले हैं उस दबें के लडके हिन्दस्तान में पैदा होते हों. निकलते हों। उसमें अगर कोई कमी है तो उस कमी को दूर करें। उर्द किसी एक फ़िरके की जूबान नहीं है। हिन्दु मुसलमान, सिख, ईसई सब की ज़मान है। सब से ज्यादा अच्छा लेर जब मैं पढ़ता हूं तो मुझे वह हिन्दू शोरा से मिलते हैं। आज भी इस शेर का और चकबस्त कोई जवाब नहीं है।

> ददें दिल, पास-ए-वफ्रा, जन्ममा-ए-इसां होना, आदमियत है वही और यही इसां होना।

इसका कोई जवाब नहीं है। पलस्फा भी उनके यहां है।

ज़िन्दगी क्या है अनास्ति के ज़हूरे तरतीब, मौत क्या है, इन्हीं अजज़ाह का परेशां होना।

यह चकबसा है। इसी तरह से बहुत से शोग दूसरे मज़हब के उर्दू के हैं। उर्दू जितनी प्यारी ज़बान है, हर कौम की ज़बान है। यह किसी एक फिरके की ज़बान नहीं है। कुछ गड़बड़ियां होने की वजह से इसमें थोड़ी कमी ज़बर आ गई लेकिन अपनी इस लोच की वजह से इस ज़बान के तगज्जुल और तरजुम की वजह से यह ज़बान अभी तक ज़िंदा है और अपनी मिठास की वजह से ज़िदा है। इसमें कोई ज़ुबहा नहीं कि सरकार का, देर आयाद दुरुस्त आयाद, बहु कदम बहुत ही काबिले

Urdu University Bill, 222 1995—Contd.

तारीफ है और इस पर पूरे तौर से ध्यान दें। जहां तक कोर्स की तरतीब का संवाल है, मैं इससे कत्तई परेशान नहीं हूं। ज़ाहिर बात है कि शुरू में कठिनाई होगी, शुरू मैं दुशवारी होगी लेकिन अगर हमारा मंजिल की तरफ रूख है, हम मंजिल की तरफ चलेंगे तो मंजिल हम को मिलेगी। इसमें हमारी जो मंशा है उस मंशा को पाने के काले हम चलेंगे तो इसमें कोई शुबहा नहीं कि यह मंशा पूरी होगी। इन सब चीज़ों को कहने के बाद मैं फिर से आपके माध्यम से मंत्री जी से यह कहना चाहूंगा कि वह इन बातों का ख्याल रखें। इसका कोर्स अच्छा बनाएं, तललीम अच्छी हो और तालीम यापता लोग उसमें हों, आला काबलियत के लोग हों और किसी तरह से आला काबलियत और तालीम यापता लोग उसमें से निकलें। इतना कहने के बाद मैं अपनी बात खत्म करता हूं। शुक्रिया।

د مسجد خان ^و تر *بردیش* • ازدد نيشنا الروم لو تواسخ سمامين مدورتا じょ 6120 حيديرة بإ دمين بيت يتجاعهما نديونمدوسو سلہ میں کا فراکام کیا بچھا۔ متسايداب اسمكا دوب بدل تشايع ليكن تحطى المنادميش ومرى بيليسك عتدارسه محتذ باده كام يوافقا - اوراس كام ك م ت بو حلف ميں (مور مع بو ي مود ملي -ميثرم معسب سير ككونه كام العمين جيبي ديخ اور شكنها باون 5000000 كوليرا بيراس یں کوئ شیمہ بیں سیے کہ الروہ فانصبوه فتلد زادر في ميكنه بالموص كوانسى مدافر مين الميت اليت ا

یو*ایک چیز میں بتا نا جا میتا بلی ک*ر العمين ورقع علمه رخا بليب يحوك لإب بنی*ں رکھیننڈ* تو یہ کام بنیں ہوں -16 میں *اور ا*بیش دت یاد وحماہ رام کرار كلكت كيم بم بادارمين تحق مسيط تمع -ووكالدلاون فاسم ليابع بشكله بني <u>جانة المحين (ينب فراي الجع (نوازمين</u> مجازه وايدملك جا لتربيه جاج بيسه ديوس برتمان تک ا<u>بھے</u> تول<u>م ا</u>فتہ اود د بور که جالاز - و درس که تبار فرنا بودمتسكار بيوجا مككا مفكتنا) k تؤينا ببت مشكابهوجا يتكاردهم نجب مبیں *کہ یہ یونسورسیٹر ک*امیا*م اس*ی وقنت بومسكى بتاجيك الاولى توليقهن س يو و و كاروجه بالي مين جا يو المع وال ترازيها يسر اور المياتي يحتز وك واخد رابته (۱) درجات س 62 اردور) (1) این او The still Cloust سة ويسبط لمرجم توكون هما 15 Solom B غ و (لا يو - ليكو، نام يواسكا اردوميد براميك - اب ي دخير توايك

Urdu University Bill, 224 223 The MaulanaAzad [RAJYA SABHA] 1995—Contd. National لليغد بهوا-ميريد فكوس مير رقما-مير فرياده (فيها مشوجب مي*ن بروحتا بولا* ايكريما ترتيجه كعل يحسب بوتعن تو بي وه معذو شو المصبق يس ازج الكرم بابولا يديجوان فساحب مي بيق-مج اس مشوط اور چکست کا تو گ جرايت كميتي نبى عنى جسكر هيدت ا جواب منين بهد-بج بابان-وي بن - ثوبي لك ا دددول-باس وفا-جزير المكان يونا-اب توتيج ال تمسيق يرعمل ويراً مدم وال ۲ د میست به بهی اور به با نسبا ان بهو نا -ليولكهب ثوق مستومعيط بين بهم اسكاكوك واب بنيوسيه فلمست جى لتكريهان -4 زندگ كيليدى لمنام كالمبور ترتيب-12-12 بيس بح ... ممال لجلای کمیزی موت ليكبه - ديني لجزا كابريشان يونا -ربورف نطليكي توجس سوالايه بيس كبع ت بويع ايت كمية ريشا تكجا بررومن سال يه جكبت به -امى في مع بت سيخسوا العمين جلين اوري في معمو مس تليش ك دوم مذہب مکاردو کی ازدو ربدر مرا وعد تو اسمر من المريشور جتى بيادى بل ايد - يرائسي ايف قب تقرى توعجمانليوكرا مويصوتك تومسته دساى فاديولا ذبان بني به - برقوم ي زبان ب - ي يحرب بل بير اجها تدا- اس خادموس بر الحرود قبى عمل تحصنا كاوجها المجر وهوالاي محالى المروالي يو د شروا م بيكر بسك بيسك يلين بريعن ي ليكن ابن اس موج ى وجد اس اس زيان کوامید اس بوندوست میں مرکالیک التة الخون الارترغ فى وجماسم يدزيان ديج تك ما دويم سومنتريج بسع برمز (دش ب ومردم بع اورابن معتام ما كاوجه مع ولار لتردمون بأت كابجى خيال ملحاجات لتواقى یے دسمیں کوٹی مشبعیہ بخیں کہ سمطار کا آدیر وه جس درج سے بونیوسٹی توطلت کا پیرد دمست لا بیرا یه تحدم مبت بی تما بل توبن واس مين اس در جست المست معددانا به درس بربد معدد ساد حیان دیں -(1) 11 - 11- 12 2 12 12 Est 12, جلىتشكردس كانبسب كاسطل يعيين کمک به توامیلی کمک تو مود شرک از دیونش اس معاقب بريشان بش مي تلا الربلت ایک قلقه ی ندان بند بع - معندومسلمان د مشوع میں تکنینا کا محک - مشوع میں تخوان ستحد عيسائ - مسب کاربان بي رسب بوكى ليك المرجمارا منزل كالمف وترب ب

منزل می طرف جلید است تو منزل بم مح ملینی -اسمین بهما دی جو منشا می اس منشا مو یک من واسمید به جلینی تو اسمیس توی منسبه بی به مد به منشا پوری محدک - ال سب جروں تو بکی من لید منشا پوری محدک - ال سب جروں تو بکی من لید منشا پوری محدک ماد حید سے منزی جس بر کناچا بیونکا مترمن ال با تور کا خیل د تحقی اسلا تو رس اچھا بنا یک - تیم اج می بید اور تو یک یا خت ددک اسمین میوں - اعلی قابلیت مود تو یک در میں امد امی فرا سے اعلیٰ قابلیت موت جائی ا در میں سے معلی اس اعلیٰ قابلیت موت با نور بات ختم کرتا ہی - مشکر یہ - ا

उपध्यक्ष (कुमारी सरोज खापङ्डे): धन्यवाद खान साहब । केसवानी जी।

SHRI SURESH **KESWANI** A. (Maharashtra): Thank you. Madam., On the eve of the independence of this country, wc partitioned this country on religious lines. As a rcsulti wc heaped enormous sufferings on the people who were compelled to migrate. Who were the victims of this religious partition of the country? The peopl» who paid ,the price for the independence of this country by blood and tears and by the loss of their hearth and homes*. It were those Moha-jirs, as Bakhtji rightly said yesterday, who never got whaythey were looking for. It were we Sindhis who have never been able to get afiv political right commensurate with the size or our population of 65 lakhs because We became landless and refugees *and compelled to spread throughout the country.

This.however, is, neither the time nor the place to raise those issues. In the postpartition era, just what did we do? We divided this-country once again by

Urdu University Bill, 226 1995—Con td.

creating linguistic States thereby reversing the forces of national integration from centripetal movement started by Gandhiji to centrifugal directions of communal divide. We divide ourselves on petty issues like linguistic States....

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Keswani, I

hope you arc speaking on the Maulana Azad Urdu University.

SHRI SURESH A. KESWANI. Madam, I am coming to that point. What have wc achieved? We are now nx-periencing the growing regionalism which was bound to be the natural offspring of linguistic realignment. We are now going to do further division of the population by setting up separate universities for each language the objects of which are totally parochial and narrow. Do we want to produce more unemployed youngsters? And we have had the audacity to associate the name of a colossus of a man who was an epitome of secularism with the creation of an institution which stings of parochialism. With such a parochial and lowly act, I really wonder when we are going to realise the meaning df "University" which by definition means a universal phenomenon, a place for learning at higher levels. Establishment of a university is primarily aimed at promoting enquiry and research and scholarship into the basics of the humanities, sciences, physics, mathematics, electronics or a host of other subjects. Setting up a university for the higher level of learning of any one or more of our languages and literature presupposes prior existence of institutions which are an apparatus for research in the quality of human existence and intellectual analysis of history and growth of a particular society. Such institutions, be they colleges or faculties or departments of a university for advanced studies grow into a university with the passage of time. It is very unfortunate that wc now live in an advanced world of fast forward'.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Keswani, before you conclude, I just would like to know whether you are speaking on the Maulana Azad National Urdu University or what.

SHRI SURESH A. KESWANI: Yes. I am talking about the Urdu University.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): But, you are not mentioning anything.

SHRI SURESH A. KESWANI: This type or universities are created by Acts of Parliament. Are we in the process of bringing these institutions down to appeasement of a religious minority? And to add insult to injury, we are associating with it the name of a great genious and mountain of a man, Maulana Abul Kalam Azad.

Urdu language has had a long cultural history. It was never the language of only one minority community. The study of the birth, growth and spread of this language gives us a bird's eyeview on the human existence and growth of their traditions and habits, culture and institutions in this sub-continent. While one does not wish to come in the way of promotion of an institution for advanced learning of Urdu, I extend my support to this Bill with the same sentiments as expressed by Shri Sikander Bakhtji Thank You.

भी मोइम्पद सलीम (पश्चिम बंगाल): मैडम वाइस चेयर परसन, मेरी पार्टी की तरफ से मैडम चन्द्रकला पांडेय ने इस बहस में हिस्सा लिया था। लेकिन मौलाना आजाद जो उर्दू, यूनिवर्सिटी, राष्ट्रीय विश्व-विद्यालय के बारे में यह चर्चा हो रही है, मैं समझता हूं कि मैं भी दो चार बातें आपकी इजाजत से इसमें बोल सकता हूं। अभी मैं अपने विद्वान साथी की बात को सुन रहा था तो दरअसल पहली गलतफहमी यह है कि उर्दू के साथ मजहब पैरोकिएलिज्म और बहुत-सी चीजों को जोड़ दिया गया। मैं तो समझता हूं कि दुनिया के इस हिस्से में सबसे ज्यादा बदनसीबी अगर किसी के साथ हुई, पूरे कांटीनेंट में हुई, तो वह उर्दू जुबान है और अभी उर्दू

Urdu University Bill, 228 1995—Comd.

विश्वविद्यालय के बारे में जो विधेयक मंत्री महोदय लाए हैं, इस से सब नाइंसाफी खत्म हो जाएगी, बदनसीबी खत्म हो जाएगी, ऐसी उम्मीद हमें तो नहीं है। लेकिन यह मामला बहत रोज से चल रहा है कि एक विश्वविद्यालय होना चाहिए। मैं इस विधेयक का संमर्थन करता हूं। जब तमाम हिंदुस्तानी जुबान के अंदर अंग्रेजी के अलावा, हायर एजुकेशन के बारे में, तालीम हो यह बात आई तो उर्दू पहली जुबान थी जिस में साइंस, मेडिकल साइंस या इंजीनियरिंग और दूसरे जो बाकी तमाम विषय है, वह उर्दू में पढाए जाते थे। मैडम, मैं कलकत्ता से आता हं और हिंदुस्तान का पहला मेडिकल कॉलेज जो कलकता में है, उस में अपार्ट फ्राम इंग्लिश जिस हिंदुस्तानी जुनान में मेडिकल साइंस पढाई गई, वह थी उर्दु। मैडम मैं गौरव के साथ कहता हं कि फिर कलकत्ता से, करांची से नहीं, कलकत्ता से जो प्रोफेसर्स थे, बुक राइटर्स थे, उन को आगरा और लाहौर भेजा गया कि टैक्स्ट बुक्स को उर्दू में ट्रांसलेट किया जाए, साइंस की किताबों को उर्दू में टांसलेट किया जाए और फिर वहां के कालेजों में भी उर्दू में पढ़ाया जाए, ताकि हिंदुस्तानी, हिंदुस्तानी जुबान में पढ़ सकें और फिर एक यूनिवर्सिटी बने और यह **यूनिवर्सि**टी लेवल तक चले। मैडम, यह तो पिछली सदी 1825 से मामला चल रहा था और उस्मानिया यूनिवर्सिटी हैदराबाद में इस सदी के शुरुआत से 1950 तक, आजादी के तीन साल बाद तक, तमाम सब्जैक्ट्स उर्दु में पढाए जाते थे। हमारे बुहत से पुराने सदस्य जो येजुएट और पोस्ट-येजुएट हैं, वहां से पढ़कर निकले और आजादी के मैदान में व दूसरे नेशनल फोल्ड्स में रहे।

मैडम, हमारे महा-महिम राष्ट्रपति जी जब इस हाउस के चेयरमैन थे, जब भी ऐसी चर्चा होती थी तो वह कभी लाइटर-वे में हम से उर्दू अल्फाज का अर्थ पूछते थे कि इस बात का मतलब क्या है बताओ? अल्जेब्रा, ट्रियोमेट्री में अल्जेबा की जो टर्मिनोलॉजी है, वह कहते हैं कि हिंदुस्तानी जुबान के अंदर अल्जेबा सिर्फ उर्दू जुबान में ही सिखाया गया और उस्मानिया युनिवर्सिटी में ट्रांसलेट किया गया था, लेकिन आज ये सब शब्द, ये सब टर्मिनोलॉजी और ये सब अल्फाज हम भुलते जा रहे हैं बल्कि मैं तो कहता हूं कि 1950 के बाद से वह सब भुलाया गया है। मैडम, अभी हिंदुस्तान की 80 यूनिवर्सिटोज में उर्दू जुबान पढाई जाती है और Language is a vehicle of knowledge लेकिन वह बात उर्दू के लिए नहीं है क्योंकि उर्दू पढायी जाती है तो लोग समझते हैं कि यह उच्च शिक्षा सिर्फ उर्दू जुबान वालों के लिए है। मैडम, उर्द में गजल लिखना हो,

5462/RS F-8-B

शायरी करना हो, अफसाने लिखना हो या उर्दू न्यूजपेपर्स में सहाफी का काम करना हो तो उर्दू ऑनर्स पढ़े या उर्दु में एम॰ए॰ पढ़े व्यक्ति को रखा जाता है, लेकिन उर्दू के अरिए जो मॉडर्न साइंस है, जो **वोकेकनल नॉलेज** है और ज्ञान के क्षेत्र में जो ट्रेमेंडस डवलपमेंट है, उस का दरवाजा खुलना चाहिए या नहीं? आज उर्दू भाषी लोगों की यही बदनसीबी है।

मैडम, आप अच्छी तरह से समझती हैं कि उर्द जुवान के लोगों की सब से ज्यादा दिकत महिलाओं की तालीम की है। उन की शिक्षा का मामला कैसे मुलझेगा? मैं उर्द को एक सब्जैक्ट नहीं समझता। कोई भी लेंग्वेज सिर्फ एक सन्जैवट नहीं है। मैडम, हम लेंग्वेज इसलिए सीखते हैं कि उस लेंग्वेज के -जरिए हम और बहुत कुछ सीखना चाहते हैं। मैडम, यहां एक कमेटी बनायी गयी थी, एक एक्सपर्ट कमेटी बनी थी कि उर्द यूनिवर्सिटी बनायी जाए। ऐसे देखने से ता किसी लेंग्वेज के साथ अगर कोई यूनिवर्सिटी जुड जाय तो इसे समझने में बडी दिकत होती है। फिर हम हिंदी यूनिवर्सिटी विधेयक भी सा रहे हैं, लेकिन हमारे यहां जुबान के साथ एक तारीख जुड जाती है। मैडम, दनिया के किसी दूसरे हिस्स में इतने कॉप्लीकशंस नहीं है लॉग्वेज के साथ, लेकिन इस सब-कांटीनेट में यह मामला टिपीकल है। बहुत से लोग समझते हैं कि उर्दु बोलते ही मुसलमान की बात आ जाती है।

मैडम, इस मुल्क में जब इस्लाम आया तो वह उर्दू ले आया और जब मुसलमान आए तो परशियन ले आए। तो लेंग्वेज इसी तरह से इंटर-एक्लंस से बनती है। अभी ईरान को मजलिस के अध्यक्ष जी यहां हिंदुस्तन में हैं। वह फारसी बोलते हैं। और हम यहां बोलते हैं हिंदी बल्कि बंगला या दूसरी और जो जुबा है तमिल, तेलग आदि। कल मैं वहां था, जब बातचीत हो रही थी हमारे अध्यक्ष से उनके अध्यक्ष की, तो बीच में अंग्रेजी में कुछ लोग इंटरप्रेट करते रहे थे। यही तो बदनसीबी हई क्योंकि अगर सौ साल पहले ऐसा होता, हमारी डेमोक्रेसी में इस और ध्यान जाता तो वह फारसी में बोलते और हमारे लोग फारसी में समझते या फिर उर्द में दोनों का इंटरप्रिटेशन हो जाता। यह मीडियम, जो रूलर्स, जो पीचेस और जो का मन पीपुल आफ दिस सबकाण्टीनेण्ट, उनके बीच का जो ब्रिज था वह हिस्सा था उर्द । उसको बाद में खतम कर दिया गया, उस बिज को तोड दिया गया या तोड़ने की कोशिश को गई। उसके लिए बहुत जिम्मेदार हैं जिसके इतिहास में मैं नहीं जा रहा हूं। लेकिन, सवाल यह है, जो मैं माननीय मंत्री महोदव से

जानना चाहता हूं कि दुसरी तमाम जो सेंट्रल यूनिवर्सिटी है उससे कहीं किसी सुरत से यह यूनिवर्सिटी कम तो नहीं होगी? यह किसी सुरत में दूसरी सेंट्रल यूनिवर्सिटी से कुछ कम नहीं होनी चाहिए।

मैडम, हमारे यहां जे॰एन॰यू॰ है, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्भिटी, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी, तमाम दूसरी सेंट्रल यूनिवर्सिटी हैं, जिनका अपना एक मोडल एक्ट है। उसका एक्सगीरिएंस आपका है, उसमें कुछ सुधार करके कुछ नयापन लाकर आप एक बिल ला सकते थे, जो किसी से कम नहीं होना चाहिए था। अभी रहमान साहब का एक अमेण्डमेंट है। मैंने उनसे पूछा कि यह अमेंडमेंट कहां से निकला। कहते हैं कि जे॰एन॰यू॰ के एवट में यह है। अगर जे॰एन॰यू॰ में है अधिकार के बारे में तो आपको क्या दिकत है लाने में? मौलाना आजाद राष्ट्रीय सर के नता थे और जवाहरलाल नेहरू से उनका कोई फर्क नहीं करते है तो फिर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और मौलाना आजाद विश्वविद्यालय में एसा फर्क क्यों? इसको जरा आपको ठीकठाक' करनी चाहिए।

मैडम, दूसरी खात, मंत्री महोदय से हम यह गुवारिश करंगे कि एक्सपर्ट कमेटी की जो रिकमण्डेशन थीं, जिसमें बहुत से लोगों से एवीडेन्स लिए गए थे और रिकमण्डेशन बनी थीं, जब इस मिल में हम देखते हैं तो पाते हैं कि एक्सपर्ट कमेटी की उन सभी रिकमंहडेशन्स को माना नहीं गया है। जो मकसद, जो स्टूकर इसके बारे में एक्सपर्ट कमेटी ने बनाया था और अपनी रिपोर्ट 1993 में दी थी पिछली हुकूमत के दौरान, उसकी रिकमंडेशन, वह सब नहीं ली गई। हमने स्टेंडिंग कमेटी में भी चर्चा की थी। हमारी आपसे यह गुवारिश है

"Please refer to the recommendations made by the Expert Committee on the establishment of the Urdu University and, if necessary, make relevant amendments." उसको मोडिफाई कोजिए। दिकत यह है कि हुकुमत बदलती है, नजरिया भी बदल जाता है, लेकिन विधेयक जो है वह वही रहता है क्योंकि जो अफसर लोग बैठे हैं वह वहीं रहते हैं। मंत्री महोदय, एच॰आर॰डी॰ कमेटी है, यह स्टेंडिंग कमेटी जब अपनी रिपोर्ट बनाकर पार्लियामेंट में ले आई तो हुकुमत बदलने के बाद भी जो कुछ पुरानी रिपोर्ट स्टेंडिंग कमेटी ओन एच॰आर॰डी॰ कमेटी है। उनको थोड़ा रेफर करना था और एकसपर्ट कमेटी को रिपोर्ट को भी देखना था। आप भी उर्दू के चाहने वाले है। आप कर्नाटक से आते हैं। उत्तर भारत में और पश्चिम भारत में उर्दू के साथ थोडा

Urdu University Bill, 232 1995-Contd.

भेदभाव हुआ, लेकिन दक्षिण भारत में या पूर्वी भारत में उतना नहीं हुआ। इसे हम गौरव के साथ कहते हैं। चूंकि वह नजरिया, वह फलसफा, वह प्रश्न, जिससे यह फर्क किया जाता है जुबो के साथ वह वहां नहीं था, कम था। इसीलिए आपसे यह उम्मीद थी कि जो रिकमण्डेशन है एक्सपर्ट कमेटी की, उन रिकमंडेशन में मैं नहीं जा रहा, आपके पास भी है, उन रिकमण्डेशनस पर आप थोड़ा ध्यान देंगे। यह अच्छा है, शुरुआत के लिए अभी ठीक है। बहुत देर हो गया। आप शुरू कीजिए, लेकिन उनकी रिकमण्डेशन जो हैं, उनको थोड़ा लागू करने की कोशिश कीजिए ताकि सही माने में नेशनल यूनिवर्सिटी बने, एक और कामन यूनिवर्सिटी न बन जाए बल्कि जो इसका मकसद है वह पूरा हो।

मैडम, उर्द पापुलेशन आज पूरे मुल्क में स्केटर्ड है। महिलाएं घर से निकलती नहीं है। उनको निकलने नहीं दिया जाता, लेकिन हायर एज़केशन में वह आना चाहती हैं। तो जैसे इन्दिरा गांधी नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी है या ओपेन स्कूल सिस्टम है, उसको यहां भी थोड़ा इस्तेमाल करना चाहिए। चुंकि यह तमिल, तेलुगु या भांगला जुनां जैसा नहीं है कि किसी एक स्टेट में कनसनट्रेटेड है, किसी एक डिस्ट्रिक्ट में कंसनट्रेटेड है बल्कि यह हर पाकेट में आपको मिलेगी, हर सब-डिवीजन में आपको मिलेगी, इसके बीलने वाले मिलेंगे। इसलिए आवासिक, रेजिडेन्सियल कैम्प्रस में इसको नहीं रखा जा सकता। यहां तक जो उर्दु बोलने वाले हैं, वह आर्टिजन हैं, वह स्विलड लेबरर हैं, अपने अपने प्रोफेशन में जुड़े हुए हैं। उनको हम एज़ुकेशन देना बाहते हैं। अपग्रेडेशन आफ द स्कीम में जो मोडर्न डवलपमेंट हैं, उसके साथ उनका दरवाजा खोल देंगे. उसके साथ उनका तालुकात कर देंगे तो यह यूनिवर्सिटी के माध्यम से थोडा ओपेन स्कूल सिस्टम हो, थोडा लिबरल किस्म का सेलेबस हो और जो मोडर्न सब्जेक्ट है, जो मोर्डन साइंस है उसको युनिवर्सिटी में ज्यादा से ज्यादा तवज्जुह दी आए। अगर उर्दू के जरिए यह दिया जाता है तो वह दरवाजा खुल जाता है, लैंगुवेज जो क्हीकरस है वह सही मायनों में इस्तेमाल किया जा सकता है। मैं इस विधेयक का ताइद करता हूं, लेकिन रिकमण्डेशन्स आफ द एच॰आर॰डी॰ कमेटी एण्ड एक्सपर्ट कमेटी, उस पर आप तवज्जुह देंगे, इस गुआरिश के साथ शक्रिया ।

التمري كدسيم بيشير بنظال». ميذا وال جميع إمس - يرى الرقى كى غرف سے معدم جندو

بإ نوست اس بحث مين حقيدها تعاليكن مولانا ازدد امدوميونيو دسري دامشويه ومشو و دحاليه الدار مين يدج جامور ي الم میں سمیر امری، میں میں جوجار با تیں تریک دجازت فيعدد معين بول مسلكا ميي ايبي مين ليغ ودوان مساعق کی بات پرمس رہا تھا۔ تر د دامل ليربى غلط فعهري يهيع كم الدوسك ساتحد مد بعد بعرو كريم يطرم ادربهت مى جيزوں توجواز ديا گيا - ميں تو سمجد إمين ته د نیاسے اس حقیقہ میں مسب سے زیادہ بوجبی المرتشي كمسا تمدموئ - يوب كانتى تثينت میں ہوئ ۔ تووہ ارتروند بان سے ۔ اور ایپ ارد و دشوود معالیہ کے اِسے میں جود بط منترى مهود - مديم مين - اس مع معب فاالمعافى خم بوجا بككي- برنعيبي حتم بوجا ميكي ليي امير بحين ترييس ب - ليكن يه معامله ببت روزسي جل دباب ي الداديك ومشوو معاليه ميدنا چاپيد-مين دمسى و مسط بيک کا معطق كرتابين جب ثمام صد دستان زبان يرابزر الكريزى علاوه حا برايجوكيش كاب میں تولیم ہو یہ بات آئ کا تواہ ہو میں زبان ىتى حبسمى سانىس مىزىلا بسانىس ا ا نجینینگ اور دوسر باقی تمام دیشے ہیں-وداردو میں بڑھاتے جاتے ہیں - میڈم- میں كلك سے 1 ما ميں دور معنود ستان كا ملام ال

233 The Maulana Azad National

Urdu University Bill, 234 1995—Contd.

الابيج بوكلكت ميرسيد- (س مين (يادف فرام انگلش "جسر معفردمتا ن زبل میں میٹریک مسامس برمعا كالش ويتى دردو-ميذم-مين تؤرو مسافة ليتايل مرجع كلكت سع - . ار اچی سے بنیں - کلکتہ سے جو مرو فیسر في - بك دا فتوس في - الواكل اودلايور جييجا أياري فيكسب بلتس نؤاردومي فترا نسسليدن لياجلن -اودي وبل كالجل مين عبى الدومين بيرحايا جلية - تاله مصفولاتان. معذومتانى ذبان ميں يبسومسكيس اور بيرايك يونيودسى بف - اوريه يونيوسي بيولة كمشقه -ميشرا يرتو بجيلى معدى اعتار معود يجيريه مرامله جل رم فتوا- ا در متمانيه يوليو مرمسي حیود ? با دحین بس مسری کے مشہومات سے ۵۹ (تن آزادی *کے بن مسال بو*ینک کام سبيكش الردومين بمعاريكها شقيقه بممادس ببت عنبر (ف معد معجر فر بجويش ادر پوست گریجویشس بی - بها وسے پیسک فطل اود آزاد میکت میدان میں اور دوسمیے . نيشنل فيلزمين ليبع-مدیوم- بهمادین مهامه دامتروین چ. جب بیدم مهرم- بهمادین می مهر ایسی اس عادس به تجیز مین خط -جب بعی ایسی چرچامبوثی مش - تو*ون کچی لائزو*یسے میم بم يع اردو الفائل كالرقد بويقة شم -لهُ اسلامله لكاب تتافر - البجر المخلفي م

مین الجبرا ک جوفز میانوچ بید قود لیت ا حفودمشا فأربا فاستعاندرا بجبو احرف ادويو زبان *سک*ار *ندر ب*ی دسک**سا با ک**یا-تود مقمانیہ يونيورسى مين فزانسبيث كتاكيا غارنيك ۲۳ پر*مشید ب*رمس*ب شخصا لولاچی اور پرمسب* النافر م موسط جامع من - بلا، ميں نونېتامين ک^ړ • ۵۰ و (سکه بېدسکا و مسب مجلايا لياريه-ميتزا-دجن معنودستان ی ۸۰ میوندیودمستیز میں دردوزبان بیمان جا ثهبه - اور کینگو تیج از اے ویعد کل المف نو ليبج "-ليكن يه بات ددوسك معالين ب- كيونكرارودو بلمائج الكرب وور بل بيساكذيها مشكسشا حرف لمارد ونربان وانوں ليك يحت معظم - لدد ومين غزل للمتنا محد-مشاعرى كزناميو-افسياده تكتنابهو-يادوو نیو*ند پسیرس میں محاق کا کام کڑا ہو*تو اردوانرس برسط- يادرومين ايم-ب بيشط ويكتى تزرعهاجا ولبع-ليكن اردوسة دريع جوما ورن مما تسميع -جوددكين نابج-*بع-اور فیمان کے چھیتر میں جو از معیند میں* خريوليمينث سيع - المسلما دروازه تعلنا جايعة با بنی - اج در دو بامشی توکوں کی میں بوجی - 4 ميد ٦- أب الجي في منه مع مع ... د. در دوزبان م موتون ی مسب سے نیادہ

235 The Maulana Azad National

\RAJYA SABHA

Urdu University Bill, 236 1995-Contd.

اورجوزبان بيه - تمل تيلكو ا دى - كل المساملہ كيت سام ا - ميں ارد و تو ايک میں وہاں تحا - جب بات چیت ہود کہ بنی | سبجیلت بنیں سمجت ا - توک بج لینگو یے حوف مستع في - يسى توبولمعين بوى كيونك المراحو ، بم الا يحظ ببت سيكحنا جامعة بمن - ميد ا-مسال بچه الرايسيا جوتا بم ارى كتيموتريسى ليهاں ايت تميينى بنا يُنتى عنى-ايك ايكبير میں دس اور دعیان جاتا تو وہ فا دسی ہوتھ تحقیق بنی بڑی۔ کہ ادد و یونیو مسلح بنا تکجلے میں- دونوں کا انٹر پر پیشش مہوجا تا۔ یہ میں الرکوئ پونیور سمی جرح اے - تواسی محصن دس سب كانهم نينغ المنت بيركاجوبرجة عا 🚽 يونيودسنى ودجع ديك مع للاديم بين ليكن ودحقته تعادردو-استوبومين ختم فر مماديديدان زبان ترساند ديك تارخ دياكيا - اس برج تو تواد دياكيا - يا توار جرد جا تدب معدم - دنيا كسك مسى دومو حقيق مين اريخ كاميليكيشنس بني مي -لينكويب كمساقة ليكن اس سب كانئ نينت ميں برمعاملہ ميں يكن ب - ببت س بول سمجية بين براد دوبواغ بي مسلمان کی ات آجا ت ہے۔ ميلام- اس ملك ميں جب اسلام لايا توو اددو الا اور حب مسلمان آع توبرسين في أسي - تونينكو يو العي م سم التريك فسنس سم بنتى ب- اعبى ايون ى بجلس بَعَاد معيكش جى يهار معد يستان میں ہیں وہ فارسی ہوتے ہیں۔ تو ہم

بور المربي حددى - ملكه بنسكه با دومرى المهيلاوس كالديم كارب (ل) كالمسلكة اك م ارد ا دهدان سع ارتد ا دهدکش ک - تو اس من مد ایک سب ک - م ایک سب ایک سب ک اسک بيبج مين الكريزي مين بجريدة المزم يعط كمنا سينكيت بين- كراس لينكو يبهت ذريع ادر بهمادید در که فادسی میں سمبر یا پراددو ایسے دیکھنے سے توکسی لینگو پیجے ساتھ جردولرس جوميع بيس اورجو كامن ميولات ميں بدى دقت موتى ہے - كم معندى ى يۇمشىشى كى كى - استىكە يىخ بىپت خەمددار ہیں - جیسیج د حیاس میں میں نیں جارہا *یوں۔لیکن مسوال یہ ہے*جوما نینیئے منتری مبودا سع جاننا جاميتا مورد دوسور ثمام سينول يونيودسني بين اس سيركبي تسي مورشیسے یہ یونیودسٹی کم تونیس ہوگا۔ يدنسى معورت مين < وسرى سيندل يفيون سع كم بيس بوناجا بيغ-ميلام-بماد بيان ج-اين-يو - جوابر لحل تنرو يونيورمني - عليكرون يونيودسى - ثمام دومرى مزدل يوندد بيخ

Urdu University Bill, 238 1995-Comd.

يس-جنكا إيذا يك موال المكت بع -اسلما ایکسید پنس آبکا ہے۔اسمیں کچھ سدجاريك - تجي زاين لازآب ايك بل لاسکھ قدر تونسی سے کم میں مواجلی اعه رحمان صاحب کا ایک امند مند ب مسفان س بوها بر مند منه من المان س نظل- کیتے ہیں کہ چاہیں- ہو-تے ايك مين يهيه- الرج - اين-يومين ب - ادهيكادي بامد مين توايكوكما د قست به - للت میں -مولدنا آزاد واخیرہے ا سترسے بینتا تھے - اورجوا ہرللل کم و سے ا نعا توی خرق بنی تر ت پس راود مج جول ظل منيوومشوودحالد ادرمولانا لأزاد وشوودحا ليهمين ايسافرق ليحل الملك در الايتو عليك علام كرنا بطيعة -میلام - د دمیری بات منزی مهوجس سے ہم یہ مجرّ در متن تو بینڈ کہ (بکنسد مے کمیٹ پر ی جود مکمنڈ پیش متی ہیت سے ہوگئ سے الورد نس برو تشخ و اور ر مکمند و نسون بنی تحییں ۔ حیب اس بل میں *ہم و ملیفت میں ۔* توبات بين د ايكسي مكين كان سمج ريكمد ويشودنومانآ بيس كمكسب جيمنعسه جوا ملولتي المسطح بأب مين الكسيث تميين بنايا تعا-اور ابني ريورث 1991 عددى عمى يجل حكومت سك دوردن اس كى ديكم ينش

وہ سب بنیں ی گی - بہمنے (مسٹودنگ تمتيعي ميں بھی چرچائی تھی مہماری اپ لم بن الزارش ب -

"Please refer to the recommendations made by the expert Committee on the establishment of the Urdu University if necessary, make relevant amendments."

اسکومولی فای کیکی رقت یہ بيع كم حكومت بدلتى بع - لنويه مجى برل جاتابير-ليكن ودجريك جريدوه وي وبيتابيع - كيونك جوا فسيردك معطوس-وہ وہی سیتھ میں -منٹری مہودے -۱- کم-ار بر المعالي المعام الما المسلط ولك كميد الم حبب دبنى ريورف بناكر بار بيصنف مي الماك توطومت بدين ليدبى بوتي پرانی مربور مصر استین نشک کمیشی ان ایکر-ار محدی می الکو تھوا ار مواز ار مغرار قدا -اودا بکسیر می کمیشی ک دبودش کو بی ريكنا فا- اب مج اردوك جا بيدول یس - آب برنا تشدیس *در کیس ا* ترجادت میں دودميشمبي بمبادت بين الردوسكامها فيفتونوا جهیریجا و مهود لبیکن دنشن بعادت میں یا یو ب مبادت میں اتنابنیں ہوا ۔ *ایسے ہم گو دیسے مسا ت*ق لم من - چونلہ وہ لسم *یہ۔ وہ فلسس*فہ – مەيرىشى- حبس سے يە فرق كيا تاس -زبان بح سا تقون وبان بين فعالم تحا- ٢

Urdu University Bill, 240 1995—Contd.

Light J!:: میں پنی جار Ľ ياس <u>م</u>ک Ð Ð بسمتي វ ŵ ليورا يهور لاه LJ 7.1 62 -4-しし تو ک V يتيني ناجا يبور ا Ľ 315 N2U يه - 2 میں (م goes to

جاسكتا يمان تت حداردو Ľ A (تتوج 0120 1-02 مادرواره کول دیں ا جسکا مباخه ذلما 75 کے مارحیہ سے قورا او برو r J r - 2 الحرين تسبعه که میں چو درمستي ميس س*بع - ا*مدکر يادهدهم المدارد وركادر 20025 りりつつっつう 20 ورصا لأفر 25 اس كزاً رية ション

SHRI SAIFULLA (Andhra Pradesh): Respected Vice-Chairinan, I am very happy today that at last the Government of India has applied its mind and has made the proposal to establish the University in the name of Maulana Abu! Kalam Azad who is known for his secular credentials during his time. Though the measure is late, the credit for it goes to

Urdu University Bill, 242 199.1—Contil.

the present Government which has introduced this Bill.

On behalf of the Telugu Desam Party, I support it. 1 will just give a few suggestions.

Mr. Sikander Bakht yesterday said that it was not for the minority community but that it was for the Urdu-speaking people. I also concur with him. I also agree with him that Urdu is not spoken only by the Muslims. In Hyderabad, most of the Hindus, Brahmins and others, speak Urdu. They write Urdu better than the Muslims. So, Urdu is not a language of the Muslims only. Urdu is the language of all the people of India'. The nation that Urdu belongs to the minorities only is absolutely wrong. The Urdu-speaking Hindus will also be very happy on the introduction of this Bill.

Yesterday some hon. Member said that there should be 33 per cent reservation for ladies. All these things can be made afterwards through an amendment. When the Bill is being introduced for the first time, this obstacle cannot be brought in. After all, we can make an amendment with regard to reservation. The people of Andhra Pradesh and the Urdu-speaking people arc very happy that this University is going to be established at Hyderabad. In fact, Hyderabad is very well known for Urdu. Mr. Chandrababu Naidu, the present Chief Minister has considered Urdu as the second language for five to six districts in Andhra Pradesh. So, it is a good thing that the University is being proposed to be set up in Hyderabad, a place where Urdu is respected.

My learned friend, Mr. Rahman Khan has proposed an amendment. With all respect to Mr. Rahman Khan, I just say that giving power to the Court docs not look nice. How can we give the legisla? tivc power to the judiciary? After all, we make some law. We can give due powers to the General Body. We can change the Memorandum of Association. We can change the Articles of Association. After all, if there is an ambiguity in law or if there is a doubt in law, naturally people will seek redressal from the judiciary, and the judiciary will give its judgement. So, giving powers to the Court docs not look nice. We are here. We are the legislators. If there is any ambiguity, if there is any lacuna, we can ourselves make amendments. We can give all the powers to the General Body itself to make amendments.

Madam, thank you for giving me this opportunity to speak on this occasion, especially v. hen the Government is naming the University after Maulana Abul Kalam Azad. I thank the Government for introducing this Bill. I support.

Thank you. Madam.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Would anybody else like to speak? I don't think.

Mr. Minister.

THE MINISTER OF HUMAN RE-SOURCE DEVELOPMENT (SHRI S.R. BOMMAI): Madam Vice-Chairman. 1 am extremely happy that all the Members who have participated in the debate have welcomed the Bill, supported the Bill, and they heve made some constructive suggestions.

First, I would like to clarify the doubts which the hon. Members have expressed in the form of suggestions.

The Leader of the Opposition, Sikan-dcr Bakhtji, was very emotional. He spoke very vehemently about Maulana Azad. Madam, I associate with all the sentiments he has expressed.

He was a great genius patriotic and scholarly leader, who stood for the principle of secularism and contributed more than anybody else in the country and he later on became the first Education Minister of free India. We are naming university after this great leader of the country. Therefore, we take care that this university at least embodies his life's mission in its running.

My friend, Shri K. Rahman Khan, has brought an amendment saying that the diplomas and degrees awarded by this university will be made equivalent to the degrees and diplomas of other universities. I must say when they a university is established under the law, its degrees and diplomas arc equivalent. There is no special law for it. All universities, whether Central or State, when arc established under the law of the land and when they award degrees, they arc recognised by law. Automatically they arc equal and the same value is attached to them. Therefore, that amendment is not necessary. I hope my friend will understand this.

There was a very good suggestion that this university should be different in some form other Central universities. In fact, it is a combination of provisions of Central universities as well as the Indira Gandhi Open University. By that I mean this university will have colleges and classes within the university campus itself. Simultaneously it will be providing distance education to students from any quarter of the country. One can appear in its examinations from anywhere and get a degree from it. Therefore, the jurisdiction of this university extends to the entire country. One should understand that this is a combination of both the ideas. The necessity for it is more in the South, as my friend has put it. In Andhra Pradesh, in Karnataka and in Maharashtra, there are more primary and secondary open schools than there are in U.P. or in Bihar. The question before the students who pass the SSLC examination in Hyderabad is which college and which university they should go to for higher education. The most ideal and readymade place for it is the Osmania University, wherein all subjects, including medicine and law, arc taught in Urdu. It was purely an Urdu university. It is from that university-that in most of the fields Urdu has developed. Not only that the Chief Minister of Andhra Pradesh was kind enough to offer about 300 acres of land

free of cost and other facilities to the university. This was the main reason why wc thought of establishing this university at Hyderabad.

Some Members talked of the term "conventional" and Open universities have been recognised universally. A conventional university offers teaching in class-rooms, while an open university offers education to students outside classrooms in thier respective locations. But this university would have features of both. This is an additional consideration. It would have both these facilities.

A suggestion was made that there should be affiliation of colleges to this university. This is not possible physically because each university's jurisdiction has been defined. There would be a conflict of interests. There would be legal complications. In this Bill we are saying that there would be classes in the university itself at Hyderabad as well as by correspondence and anybody from any part of India can take any course and study and obtain a degree.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: If there is an exclusive Urdu college can it not be affiliated to the Maulana Azad National Urdu University?

SHRI S. R. BOMMAI: They would have centres. If there is an Urdu college, it might, have been affiliated to some university already.

SHRI K. RAHMAN KHAN (Karnata-ka): What Mr. Hanumanthappa is saying is that this university would impart even technical education. Suppose, in a State, somebody wants to establish an Urdu college for technical education where there are prominently Urdu-speaking people.

The existing universities may not give affiliation because they do not have the syllabus. If this proposed Urdu university gives affiliation to such colleges, then, it would greatly help them and it would not create any problems. There were similar instances.

establishing them.

SHRI S. R. BOMMAI: So far as my knowledge goes, there are no such instances. If somebody wants to establish an Urdu college, then, the university can consider

SHRI H. HANUMANTHAPPA (Karnataka): The present Bill can provide it. It can take care of the contingencies which arise.

SHRI S. R. BOMMAI: Without anybody demanding for it, how can it be done?

SHRI H HANUMANTHAPPA: Demand starts only after this university has been established

SHRI S. R. BOMMAI: The university's body would be there. When such an application comes, they would take a decision.

So far as the recommendations of an expert committee arc concerned, most of them have been accepted by us except this affiliation. This affiliation was not accepted because of the legal complications.

The hon. Member, Shri K. Rahman Khan wanted to know about the constitution of the court, the term of the office members, the salaries as prescribed by the statute. He wanted to know more details. I think only in respect of the Aligarh Muslim University some details arc there. Why we haven't given all the details is the various bodies would come into existence. It would be identical to an Act of a Central University. When different bodies arc formed, they would frame statutes, ordinances and necessary rules as required by the said university. Therefore, we arc not imposing restrictions. We are giving them more powers. When they come into existence, we will contemplate what is necessary.

Another question was put about the medium of instruction. I would like to refer to clause 4 dealing with the objects of the university. It says, "The objects of the University shall be to promote and develop Urdu language; to impart educa-

Urdu University Bill, 246 1995-Cmtd.

tion and training in vocational and technical subjects through the medium of Urdu; to provide wider access to people desirous of pursuing programmes of higher education and training in Urdu medium through teaching on the campus as well as at a distance and to provide focus on women education". It is clearly indicated that the medium of instruction will be Urdu, at the same time, in the acts in respect of other universties, a provision has been made for a course to learn English or French also. The medium of instruction will remain Urdu. But studying other languages may be necessary in some cases. And in every university, such provisions arc there. That provision can be made by this Unvicrsity also.

Madam, when a reference is made to minority language—I explained it yesterday also-the reference is to the linguistic minority and lot to the minority based on religion. Both Hindus and Muslims speak Urdu. Infact, Urdu is a language born in India. As referred to earlier, when Islam came to India, Persian, the Turkey language, came. But if we study the history of Urdu. Amir Khusro a scholar from Kashmir, came to Delhi. Here, the local language that was spoken in Delhi and roundabouts was then called *Khari buli*. It is spoken in Haryana even today.

The Vicc-Chairman (MISS SAROJ KHAPARDE): It is not *Khari boli*, but *khadi* be)//.

SHR S.R. BOMMAI: It is a mixture. It has its origin in Indian languages. The origin is India, Hindustani. I am, proud to say that I come from a town, Hubli-Dharwar, of Hindustani musicians. Gcn-gubai Hangal is my neighbour. Mallikar-jun Mansoor is no more. Bhimscn Joshi comes from this very city. Then there is Basavraj Rajguru. All these great Hindustani mucisians arc from my town. And there arc Urdu schools almost in every taluk in Karnataka, in big villages. Similarly, we have in Maharashtra and Andhra while, 1 am sorry to say, there arc no

Urdu University Bill, 248 1995—Contd.

schools in Uttar Pradesh or Bihar where Urdu is spoken largely. That is a fact. I am only mentioning... (*Interruptions*).

SHRI MD. SALIM (West Bengal) Including Delhi. In Delhi schools, Urdu teachers arc not being appointed now. (*Interruption*).

SHRI TRILOKI NATH CHATUR-VEDI: (Uttar Pradesh) There arc more Urdu teachers in U.P. than students themselves. That is the trouble.

SHRI S.R. BOMMAI: I was trying to justify why we have the university at Hyderabad. There was a mention of the recommendations of the Department-related Standing Committee. We have looked into these recommendatios. Those arc matters which can be taken into consideration and neccesary changes can be made in the statute by way of an Ordinance when the University comes into existence and when the bodies are constituted. I do not want to add anything more. I would only say that it hes already been delayed and I would assure the Members that the University will be established at Hyderabad as early as possible. A provision of Rs. six crores has already been made. I have stated this fact in the Bill itself, and if necessary, more money will be given and the university will be established at Hyderabad to the satisfaction not only of the Members of Parliament but also to the satisfaction of the Urdu-speaking people. (Interruptions)

SHRI TRILOKI NATH CHATUR-VEDI: It should not be to the satisfaction of the Urdu-speaking people but to the satisfaction of the Urdu-loving people. All of us are lovers of Urdu.

SHRI S.R. BOMMAI: All right. Lastly, I would say that the Urdu language is a combination of two religions or coming together of two religions — Islam and Hinduism — and it is of Indian origin. It is a secular language in my view because no religious scripts are in Urdu. It is a secular language. It is the language of the people and not of Gods. Therefore, I am proud to move this Bill and I hope it will be passed unanimously.

SHRI SOLIPETA RAMACHANDRA REDDY: (Andhra Pradesh) I would like to submit one thing.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): I think you spoke yesterday.

SHRI SOLIPETA RAMACHANDRA REDDY: I am not speaking. I just want to have one clarification. (*Interruptions*) I have requested for deletion of sub-clause (c) of Clause 27. It is quite contradicting. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN: (MISS SAROJ KHAPARDE): You see, I have got other Bills also. (*Interruptions*)

SHRI S.R. BOMMAI: I have already explained it. Does it relate to section 4? (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): The question is:

That the Bill to establish and incorporate a University at the national level mainly to promote and develop Urdu language and to impart vocational and technical education in Urdu medium through conventional teaching and distance education system and to provide for matters connected therewith or incidental thereto, be taken into consideration.

The motion was adopted.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): We shall now take up Clause by clause consideration of the Bill.

Clauses 2 to 6 were added to the Bill.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Insertion of new Clause 6A. There is an amendment for insertion of new Clause 6A, No. 3, by

Urdu University Bill, 250 1995—Contd.

Shri K. Rahman Khan. (*Interruptions*) Let the hon. Member speak first.

NEW CLAUSE 6A

SHRI K. RAHMAN KHAN: Madam, I beg to move:

(3) "That at page 4, *after* line 26, the following new clause be *inserted*, namely:—

"6A. The degrees, diplomas and other academic distinctions granted to or conferred on persons by the University shall be recognised by the Central and the State Governments as are the corresponding degrees, diplomas and other academic distinctions granted by any other University incorporated under any other Act."

Madam Vice-Chairman, I have moved this Amendment for the insertion of new Clause 6A. The hon. Minister has said that this Bill has been framed according to the existing Central University Acts. In the Aligarh Muslim University Act, section 6(c) states as under in respect or recognition of degree.

"The degrees, diplomas and other academic distinctions granted to or conferred on persofts by the University shall be recognised by the Central and the State Governments as are the corresponding degrees, diplomas and other academic distinctions granted by any other University incorporated under any other Act."

I have moved an amendment similar to a section which is existing in the Aligarh Muslim University Act, which is a Central Act. It is the Aligarh Muslim University act which I have read just now. I have only moved an amendment for the insertion of a similar clause by way of clause 6A, that is, the degrees, diplomas and other academic distinctions granted to or conferred on persons by the University shall be recognised by the Central and the State Governments as are the corresponding degrees, diplomas and other academic distinctions granted by

any other University incorporated under any other Act. This is a normal clause. This is already there in the Aligarh Muslim University Act. It will further strengthen this University. I request the hon. Minister that in the fitness of things this amendment may kindly be accepted. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Let the Minister speak.

SHRI S.R. BOMMAI: Let me explain to my friend. In no other University Act is there such a provison. *(Interruptions)...*

SHRI RAHMAN KHAN: I am reading the Aligarh Muslim University Act. (Interruptions)...

SHRI S.R. BOMMAI: I will explain to you. Please hear me. (*Interruptions*)... Why do you go by the Aligarh University? There is the JNU, the Delhi University, the Banaras Hindu University, etc. All these Central Universities are there. When a university is established according to law it is legally recognised. No special provision is necessary. I don't know why they had introduced it in the Aligarh Muslim University Act. In no other University Act is there such a provision. (*Interruptions*)...

SHRI RAHMAN KHAN: Madam, my point is this. When it is there in the Aligarh Muslim University Act, what is wrong in introducing it here? (*Interruptions*)...

SHRI S.R. BOMMAI: I may think of deleting it. (*Interruptions*)...

SHRI RAHMAN KHAN: That is a different question. (*Interruptions*)...

SHRI S.R. BOMMAI: In no other University Act is there such a provision. It is automatically recognised and it is legal and valid. (*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Minister, you have said what you wanted to say. Let me ask the hon. Member whether he would like to withdraw the amendment.

Urdu University Bill, 252 1995—Contd.

SHRI S.R. BOMMAI: I would only request him to withdraw the amendment.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Rahman Khan, would you like to withdraw the amendment?

SHRI RAHMAN KHAN: This is an Urdu University. I have moved the amendment with a view to strengthening this University. Since the hon. Minister has given an assurance I withdraw my amendment.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Has he got the permission of the House to withdraw the amendment?

HON. MEMBERS: Yes.

The amendment (No.3) was, by leave, withdrawn. Clauses 7 to 18 were added to the Bill.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): There is one amendment (No. 4) by Shri Rahman Khan.

SHRI K. RAHMAN KHAN: Madam, I beg to move—

4. That at page 7, *for* lines &—15, the following be *substituted*, namely:—

"(2) The court shall be the supreme governing body of the University and shall exercise the powers of the University, not otherwise provided for by this Act, the statutes, the Ordinances and the Regulations and it shall have power to review the acts of the Executive and the Academic Councils (save where such councils have acted in accordance with powers conferred on them under; this Act, the Statutes or the Ordinances).

(3) Subject to the provisions of this Act, the Court shall exercise the following powers and perform the following duties, namely:—

- (a) to make Statutes and to amend or repeat the same;
- (b) to consider Ordinances;

- (c) to consider and pass resolutions on the annual report, the annual accounts and financial estimates;
- (d) to elect such persons to serve on the authorities of the University and Jo appoint such officers as may be prescribed by this Act or the Statutes;
- (e) to review from time to time the broad policies and programmes of the University and to suggest measures for the improvement and development of the university;
- (f) to advise the visitor in respect of any matter which may be referred to it for advice; and
- (g) to exercise such other power and perform such other duties as may be conferred or imposed upon it by this Act or the Statues"

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापडें): रहमान खान साहब, आप पूरा अमेडमेंट पढ़ने के बजाय आपका अमेडमेंट क्या है, वह सदन को बताएं तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री के॰ रहमान खानः अच्छा में बता देता हं।

I am referring to clause 19 of the Bill. The powers of the Court have not been defined here. Clause 19 says, "The constitution of the Court and the term of office of its members shall be prescribed by the Statutes".

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Minister,

would you like to react to it?

SHRI K. RAHMAN KHAN: Madam, a similar provision is there in the JNU and the Aligarh Muslim University. When a similar provision is there in the two Central universities, why such a provision has not been provided in this university?

SHRI S.R. BOMMAI: My friend, Shri Rahman Khan, should understand one thing. The Aligarh Muslim University came into existence before the UGC Act was passed. The UGC Act specifically

 on
 tions)....

 to
 THE
 VICE-CHAIRMAN
 (MISS

 and
 SAROJ
 KHAPARDE):
 Let
 the
 Minister

 ter
 react to,it(Interruptions)....
 The
 The
 The
 The

SHRI S.R. BOMMAI: Kindly refer to Statute .-..(*Interruptions*)....

SHRI S.R. BOMMAI: Such a provision is there(*Interruptions*)....

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Just a minute. It is there on page 18. I will read it.

"Ten members of the Court shall form a quorum for a meeting of the Executive Council."

Provision has been made for this (Interruptions)....

SHRI K. RAHMAN KHAN: What are the powers of the court? The powers of the Court have been defined in the case of Jawaharlal, Nehru University and the Aligary Muslim University.

SHRI S.R. BOMMAI: We have not mentioned it in detail because we wanted to give more powers to the executive.

SHRI K. RAHMAN KHAN: How can that be done?

SHRI S.R. BOMMAI: Please listen to me. It may be different in the case of different universities. The necessary powers will be. given to the executive. Whatever you have said will be kept in mind while giving powers to the Court(*Interruptions*)....

SHRI VAYALAR RAVI: I am on a point of order. These two amendments had been moved in advance by the hon.

refers to the powers of universities, syndicates, senate and passing of statutes and ordinances. Therefore, we have to make a distinction between'the universities which came into existence before this UGC Act was passed and the Universities which came into existence after the UGC Act. The situation has changed after the UGC Act. We have not made a detailed statement here because we want to give more powers to the bodies which would come into existence. The university might need certain changes. Executive bodies are there. Ordinances and statutes would be passed. Powers have been'given to the executives. They would define the details(Interruptions)....

SHRI K. RAHMAN KHAN: Who makes statutes?(Interruptions)....

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Khan, are you moving this amendment?

SHRI K. RAHMAN KHAN: Madam, I have already moved it (Interrup tions)....

SHRI S.R. BOMMAI: Madam, I request him to withdraw his amendment. (Interruptions)....

SHRI K. RAHMAN KHAN: Madam, 1 am seeking a clarification. The JNU and the Aligarh Muslim University are having a similar provision.

SHRI' H, HANUMANTHAPPA: Many universities are quoting the directions of the UGC-(*Interruptions*)....

SHRI K- RAHMAN KHAN: I would

like to know(Interruptions)..... Madam, there is a lacuna in this" Bill.(Interruptions).... Unless the UGC Act(Interruptions)....

उपसभाष्यक्ष (कुमारी सरोज खापडें): रहमान खान संहब, आप अपना अमेडमेंट विदड्रा कर रहे हैं मा मुव कर रहे हैं?

Urdu University Bill, 256 1995—Contd.

Member, Shri Ramhan Khan. The Minister is expected to reply to the points that have been raised. Unfortunately, we could not understand the reply that the Minister has given. The point raised by Mr. Khan is very valid. The power of the Court is different from the power of the Executive Council. The amendment had been moved in advance. The Minister should have come prepared with his reply. It was not an extempore amendment, we have not understood the reply given by the hon. Minister. I believe that Mr. Khan is correct. The powers of the Court have to be defined. This has been done in the case of Jawaharlal Nehru University and the Aligarh Muslim University. Now the Minister is talking about the University Grants Commission which has no relevance here. ...(Interruptions) ...

SHRI S.R. BOMMAI: I am sorry. Shri Vayalar Ravi has not heard me properly. Clause 19 says.

"The constitution of the Court and the term of office of its members shall be prescribed by the Statutes."

The provision is there ... (Interruptions) ...

SHRI K. RAHMAN KHAN: This is not there. ...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Minister, why don't you mention the clause where this has been mentioned. I think it is clause 19.

SHRI K. RAHMAN KHAN: The definition of the Executive Council has been given as: "'Executive Council' means the Executive Council of the University."

SHRI S.R. BOMMAI: Please let me read it:

"Subject to the provisions of this Act, the Court shall have the following powers and functions, namely:—

(a) to review, from time to time, the broad policies and programmes of

the University and to suggest measures for the improvement and development of the University;

(b) to advise the Visitor in respect of any matter which may be referred to it for advice; and

(c) to perform such other functions as may be prescribed by the Statutes."

Everything is there.

SHRI K. RAHMAN KHAN : There is ambiguity. It has the power to review the policy ...(*Interruptions*)... No mention has been made as to who frams the statutes.

SHRI S.R. BOMMAI: Let me complete. Clauses 25 and 26 stipulate how statutes are to be framed. I request him to withdraw it in view of the assurance I have given and the provisons I have pointed out.

SHRI K. RAHMAN KHAN: If there is ambiguity, will you bring a further amendment to this Act, if necessary?

SHRI S.R. BOMMAI: Definitely we

will bring.

SHRI K. RAHMAN KHAN: Madam, I withdraw the amendment.

The amendment (No. 4) was by leave, withdrawn.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): The question is, that clause 19 stand part of the Bill.

The motion was adopted. Clause 19 was added to the Bill. Clauses 20 to 43 and the Schedule were

added to the Bill. Clause 1: Short title and commencement

SHRI S.R. BOMMAI: Madam, I move:

"That at page 1, line 4, *for* the figure "1995" the figure "1996" be *substituted*.

The question was put and the motion was adopted Clause 1, as amended, was added to the

257 The Mauluna Amd National

Urdu University Bill, 258 1995—Contd.

Bill.

The Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

SHRI S.R. BOMMAI: Madam, I beg to move:

"That the Bill, as amended, be passed."

The question was proposed.

डा॰ जगजाथ फिश्र (बिहार) : महोदया, मैं मानव संसाधन मंत्री जी को और इस सरकार को इस ऐतिहासिक विधेयक के लिए बयाई देन: चाहूंना। यह विधेयक अनेक वर्षों से विधाराधीन था और पिछली सरकार ने 1995 में इस विधेयक को प्रसुत भी किय या, लेकिन वह पारित नहीं हो पाया था। वह अधूरा कम आज पुरा हो रहा है।

मैडम, इस की आवश्यकता इसलिए है कि इस देश के उर्दू माथा माधी और अल्पर्सख्यक शिक्षा की युख्य धरा में शामिल नहीं हो पाए। आर्थिक सामाजिक स्तरों पर उन का उन्नयन नहीं हो पाय। और बहुत दिनों से यह मांग को जा रही थी कि उर्दू की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए जो कि इस देश की एक माथा है। ...(व्यवधान)...

DR. BIPLAB DASGUPTA (West Bengal): Madam, what is going on?

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): In the third reading, a Member has the right to speak.

DR. IAGANNATH MISHRA: I have every right to speak.

मैडम, दो-तीन बातें हम मुख्य रूप से कहना चाहते हैं। इस देश में शिक्षा में, व्यवसाय में, सामाजिक जीवन में और तकनीकी शिक्षा में विशेषकर, अल्पसंख्यकों की हिस्सेदारी बन नहीं पाई है। इसलिए आजादी के पचास साल बाद भी इस देश के अल्पसंख्यकों में वह सहधागिता, साझेदारी हम स्थापित नहीं कर पाए है। इस विश्वविद्यालय से अपेक्षा है कि यह जो अधूरे काम रहे है, उसे पूरा किया जाएगा। हमारी मंत्री जी से दो अपेक्षाएं है। एक यह कि केवल विश्वविद्यालय से उनकी आवश्यकता की पूर्ति नहीं होगी, सरकारी सेवाओं में उनकी भरती उपयुक्त ढंग से नहीं हो पाती है। इसलिए इस 5462/RS F—9-A विश्वविद्यालय के माध्यम से देश की भिन्न स्तरों की प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए विशेष व्यवस्था होनी चाहिये नौजवानों के रोजगार के लिए, इस विश्वविद्यालय के माध्यम से उन्हें प्रतियोगिता परीक्षा के योग्य बनाया जाए: दूसरा तकनीकी सेवा में, तकनीकी शिक्षा में अल्पसंख्यकों का हिस्सा नहीं के बाराबर है, इसलिए इस विश्वविद्यालय में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये ताकि उन्हें निश्चित रूप से तकनीकी शिक्षा दी जाए, व्यावसायिक शिक्षा दी जाए। ...(व्यवचान)...

श्री विष्णु कान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश): यह आप इसको उर्दू के साथ क्यों जोड़ रहे हैं? माननीय मंत्री जी ने भी उनको कहा कि सेकुलर है। जितने बोले, सम बोले ...(ष्यवधान)...

उपसभ्याध्यक्ष (कुमारी सरोज खायडें): शास्त्री जी, मैंने आपको अनुमति नहीं दी बोलने की। आप कपया बैठिए और मिश्र जी को बोलने दीजिएगा।

भी विष्णु कान्त शास्त्री: आप गलत बोल रहे हैं, यह मैं कह रहा हूं। ...(व्यवधान)...

डा॰ जगन्नाच मिश्रः मैडम, मैं केवल दो बात ही कहना चाहता हूं। मौलाना आजाद के नाम पर जो विश्वविद्यालय है, यह सेकुलर है, धर्म-निरपेक्ष है। मौलाना आजाद की छवि वही है, इसलिए अपने आप सारे देश में इससे सद्भावना फैलेगी। दूसरा उर्दू नाम इससे जुडा हुआ है और उर्दु माबा-माधी सेंभी घर्य के, सभी जाति के लोग हो सकते हैं. लेकिन उनमें अल्पसंख्यकों की तादाद ज्यादा है, इस सच्चाई को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इस बात को भी अखीकार नहीं किया जा सकता कि इस देश में अल्पसंख्यकों को हम शिक्षा में, तकनीकी शिक्षा में, रोजगार में वह हिस्सेदारी नहीं दे पाए हैं, जो हमने पारतीय संविधान के अंतर्गत उन्हें आसासन दिया था। इस विश्वविद्यालय की स्थापना से इस अधूरे काम को हम पूरा कर सकेंगे। भारतीय **राष्ट्रीय कांग्रेस का** जो संकल्प था, जो निर्णय था, जो वादा था, उसे यह सरकार पुरा कर रही है, इसलिए हम इन्हें धन्यवाद देना चाहेंगे। धन्यवाद ।

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): The question is:

"That the Bill, as amended, be passed."

The motion was adopted.